विचार बिन्दु

मन की दुर्बलता से भयंकर और कोई पाप नहीं। –विवेकानंद

जनकल्याण बनाम रेवड़ी बाँटना

प्रधानमंत्री ने कुछ समय पूर्व बुंदेलखंड एक्सप्रेस के उद्घाटन के अवसर पर देश में रेवड़ी संस्कृति को समाप्त करने की बात कही थी और यह भी कहा कि मुफ्त में चीजें बांटने की जो प्रवृत्ति कई दलों ने अपनाई है, वह देश के लिए बहुत खतरनाक है। इससे देश का भविष्य अंधकार मय हो जाएगा।

उनके इस वक्तव्य के बाद इस विषय पर देश में बहस प्रारंभ हो गई है कि रेवड़ी बाँटना वास्तव में है क्या? जनता को कोई भी वस्तु या सुविधा मुफ्त में देने की सरकारों की प्रवृत्ति को प्रधानमंत्री ने रेवड़ी- संस्कृति की संज्ञा दी है। यह प्रकरण सुप्रीम कोर्ट में भी गया और वहां पर न्यायाधीशों द्वारा सरकार से यह स्पष्ट करने के लिए कहा गया कि मुफ्त सुविधा बांटने से अथवा रेवड़ी बांटने से क्या तात्पर्य है? आज के इस आलेख में हम इसे ही समझने का प्रयास करेंगे कि रेवड़ी बांटने का अर्थ क्या है एवं यह जन कल्याण की नीतियों से किस प्रकार अलग है?

भारत एक जन कल्याणकारी राष्ट्र है और यहां के नागरिकों के हित में कार्य करना सरकार का दायित्व है। नागरिकों के कल्याण हेतु सरकारें विभिन्न प्रकार की योजनाएं बनाती हैं ताकि उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके। ऐसा करते समय यह देखा जाता है कि जिन व्यक्तियों की क्षमता अपने स्वयं के स्तर पर जीवन को बेहतर बनाने की नहीं है, उन्हें किस प्रकार की सहायता राज्य द्वारा उपलब्ध कराई जा सकती है? इस प्रकार की सहायता कई बार, कम कीमत पर वस्तुओं का वितरण अथवा कम कीमत पर आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवा कर दी जाती है।

सरकार द्वारा संचालित विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल आदि इसी सिद्धांत के आधार पर बनाए गए हैं। इन सबको भी कई लोग रेवड़ी बांटने की श्रेणी में रख सकते हैं। राज्य सरकार अथवा केंद्र सरकार जो भी धन जनता के कल्याण पर व्यय करती है, वह जनता के ही द्वारा कर अथवा अन्य प्रकार से राज्य के खजाने में जमा किया जाता है। इस प्रकार के धन -संग्रहण में देश के प्रत्येक नागरिक का योगदान है। सामान्य धारणा यह है कि जो व्यक्ति आय कर देते हैं वही सरकार के खजाने में धन जमा करते हैं और इसी के माध्यम से अन्य लोगों को मुफ़्त सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं।

पहले हम 'रेवड़ी बांटने' का अर्थ समझ लेते हैं। एक कहावत है- 'अंधा बांटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दे।' अर्थात, जो व्यक्ति अधिकार प्राप्त करता है वह उसका प्रयोग अपने ही लोगों को लाभ पहुंचाने में करता है।

सत्ता में आने पर अधिकांश लाभ अपने ही लोगों को पहुंचाना रेवड़ी बांटने के समान है। सत्ताधारी लोग इस प्रकार का कार्य करें कि सरकार के माध्यम से विभिन्न प्रकार के लाभ कुछ चुनिंदा व्यक्तियों को या अपने पसंद के व्यक्तियों को उपलब्ध कराएं, तो उसे रेवड़ी बांटना कहा जाना गलत नहीं होगा। सत्ताधारी दल चाहे वह कोई भी रहा हो, ऐसा काम करते आए हैं। उदाहरण के लिए, पसंदीदा उद्योगपतियों के बड़े-बड़े कर्ज माफ करना, किसी निकटस्थ व्यक्ति के घर तक सार्वजनिक धन से सड़क बनाना, उसके लिए विशेष रूप से विद्युत व्यवस्था कर देना, अपने मिलने वालों को ठेके देना, अपने रिश्तेदारों को नौकरियां देना आदि-आदि। ऐसा करते समय सभी नियमों-कानूनों को ताक पर रख दिया जाता है। कई बार कुछ विशेष व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने के लिए शर्तों में छूट तक दे दी जाती है। अयोग्य व्यक्तियों को नियुक्ति दे दी जाती है।

इसी में पूर्व सांसदों, पूर्व विधायकों को आजीवन पेंशन देना भी सम्मिलित है। जिस द्रुत गति से स्वयं अपने भत्ते, पेंशन, सुविधायें बढ़ाने का निर्णय विधायकों एवं सांसदों द्वारा लिया जाता है, वह रेवड़ी बांटने जैसा ही है। पूर्व सांसदों को आजीवन मुफ्त वातानुकूलित रेल - यात्रा कराना भी इसी श्रेणी में माना जाएगा। ऐसे ही यदि पर्यटन निगम का कोई उच्च अधिकारी या मंत्री अपने नाते रिश्तेदारों को निगम के विश्राम गृहों में मुफ्त में ठहराए तो वह निश्चित रूप से रेवड़ी बांटने जैसा है। यह सब किसी भी परिस्थिति में सही नहीं माना जा सकता और इसको रोका ही जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री जी ने जिस परिप्रेक्ष्य में यह बात कही थी वह कुछ और था। उनके अनुसार मुफ्त शिक्षा, मुफ्त इलाज, मुफ्त राशन, मुफ्त किताबें, मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी देना नितांत अनुचित है और देश के लिए चिंताजनक है। सवाल तो यह सरकारों से पूछा जाना चाहिए कि वे नागरिकों के लिए अब तक सुनिश्चित अच्छी आय देने वाले रोजगार की व्यवस्था सबके लिए क्यों नहीं कर पाईं? क्या यह गरीब, दलित, आदिवासी लोगों का निर्णय था कि उन्होंने इन परिवारों में जन्म लिया?

सवाल तो यह सरकारों से पूछा जाना चाहिए कि वे नागरिकों के लिए अब तक सुनिश्चित अच्छी आय देने वाले रोजगार की व्यवस्था सबके लिए क्यों नहीं कर पाई? क्या यह गरीब, दलित, आदिवासी लोगों का निर्णय था कि उन्होंने इन परिवारों में जन्म लिया?

सभी नागरिकों को गरिमापूर्ण जीवन यापन के लिए आधारभूत सुविधाएँ जैसे– शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, बिजली उपलब्ध कराना प्रत्येक जन कल्याणकारी सरकार का दायित्व है। जब वे स्वयं अपने स्तर पर इनकी व्यवस्था नहीं जुटा पायें तब तक सरकार को उपयुक्त अनुदान भी देना होगा और आवश्यक हो तो नि:शुल्क भी यह सब उपलब्ध कराना होगा। सरकारी अनुदान के बिना, आवास बनाने में असमर्थ लोग क्या कच्ची बस्तियों में नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त रहेंगे? क्या मुफ्त इलाज के अभाव में असमय मरना ही गरीब लोगों की नियति है? सस्ती रसोई गैस उपलब्ध ना करा पाये तो क्या उम्र भर निर्धन महिलाएँ चूल्हे के धुएँ से विभिन्न साँस की बीमारियों से पीड़ित होती रहे? एक जन कल्याणकारी राज्य में यह स्वीकार्य नहीं हो सकता है।

इन परिस्थितियों में यदि सरकार कोई अनुदान की व्यवस्था करे अथवा कोई वस्तु अथवा सुविधा कम कीमत पर अथवा नि:शुल्क उपलब्ध कराए तो इसे रेवड़ी बांटना कहा जाना उचित नहीं है। उदाहरण के लिए कोरोना काल में रोजगार समाप्त होने पर एवं आय के साधन लगभग समाप्त होने पर, देश के 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन का वितरण स्वयं प्रधानमंत्री के निर्देश पर किया गया तो क्या उन्होंने रेवड़ी बांटी? कतई नहीं।

दिल्ली की सरकार यदि एक निश्चित सीमा तक बिजली और पानी मुफ्त देने का काम करे और ऐसा वह बिना अतिरिक्त कर लगाए करे तो उसकी सराहना की जानी चाहिए न कि आलोचना।

रेवड़ी बांटने और जन कल्याण में अन्तर यही है कि जिस व्यक्ति को लाभ दिया जा रहा है, वह उसके लिए उपयुक्त पात्र है अथवा नहीं। क्या इस प्रकार की सुविधा बिना किसी भेदभाव के दी जा रही है?

यदि प्रधानमंत्री की बात को आगे बढ़ाया जाए तो बीपीएल परिवारों को अनुदानित राशन उपलब्ध कराना, कृषकों को कम कीमत पर बिजली उपलब्ध कराना, यह सब रेवड़ी बांटना माना जा जाएगा, किंतु वास्तव में ऐसा है नहीं। यदि सरकार इस काम के लिए विदेशों से कर्जा लेकर अपने नागरिकों को, विशेषकर अपने मिलने वालों को, अनाप-शनाप लाभ पहुंचाएं तो इसे अवश्य रेवड़ी संस्कृति कहा जाना चाहिए। ऐसा करना निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी घातक है। श्रीलंका में ऐसा ही हुआ जहां पर सरकार ने विदेशों से अनाप-शनाप कर्जा लेकर अपने समर्थकों को सब सुविधायें मुफ्त बांटी। इसका लाभ केवल सत्ताधारी परिवार के लोगों को मिला। जैसी संभावना थी, लोगों ने एक सीमा से अधिक होने पर इसका प्रतिकार किया। अंतत: शासकों को सत्ता छोड़ कर देश से भागना पड़ा।

कुल मिलाकर प्रश्न केवल सरकारी खजाने के उपयोग की प्राथमिकता तय करने का है। यदि आप कुछ गिने-चुने घरानों के लाखों करोड़ रुपए माफ कर दें तो वह अवश्य ही अनुचित है किंतु यदि बिना किसी भेदभाव के निर्धन लोगों को शिक्षा और स्वास्थ नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाए तो उसे उनका अधिकार मान कर दिया जाना होगा। अच्छी सरकार वही होगी जो करों से प्राप्त राशि का उपयोग इस प्रकार से करे कि देश में असमानता कम हो। सभी नागरिक इस प्रकार की क्षमता को प्राप्त कर सकें कि उन पर, सरकार को अनुदान देने की आवश्यकता कम से कम होती चली जाए।

इस वर्ष जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो इस विषय पर चर्चा अवश्य होनी चाहिए कि देश के खजाने पर पहला अधिकार किसका है? क्या उन बड़े उद्योगपतियों का एवं उद्यमियों का जिन्होंने अपनी आय में कोरोना काल में भी बहुत तेजी से वृद्धि की अथवा उन लोगों का, जिन्होंने कोरोना जैसे काल में अपना रोजगार खोया और जिनकी आमदनी भी पहले से बहुत कम हो गई? क्या सही है और क्या गलत, इसी का निर्णय उपयुक्त नहीं होने का परिणाम है कि समानता के पैमाने पर देश की स्थिति पहले से भी खराब हुई है। यह अवश्य है कि निर्धनता की पहचान करने के मापदंड को सही बनाया जाए एवं भ्रष्टाचार का इस पूरे व्यवस्था में कोई स्थान ना हो। जब किसानों का कर्जा माफ किया जाए तो उसे रेवड़ी बांटना कहा जाए और बड़े घरानों का लाखों करोड़ का कर्जा माफ कर दिया जाए तो उसे देश के विकास हेतु आवश्यक बताया जाए, ऐसी सोच सदैव संदेह के घेरे में रहेगी।

यही सिद्धांत न्यायपालिका पर भी लागू होता है। यदि न्यायाधीश स्वयं के संबंध में निर्णय कर अपनी सेवा के दौरान एवं सेवानिवृत्ति के पश्चात वाली सुविधाओं में कई गुना वृद्धि करते हैं तो इसे भी यही कहा जाएगा कि देने वाले ही स्वयं के लिए जनता के धन का उपयोग कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री के इस कथन का सभी समर्थन करेंगे कि रेवड़ी बांटने की प्रवृत्ति समाप्त होनी चाहिए, किन्तु यक्ष प्रश्न यही है कि रेवड़ी बांटना किसे कहा जाएगा और असमानता दूर करने के आवश्यक जन कल्याण कार्य किसे?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

गांधी के सपनों का भारत

सुरेंद्रसिंह शेखावत

स्वाधीनता की पचहतरवीं सालगिरह मानते हुए आजादी के आंदोलन के सेनापति महात्मा गांधी के सपनों के भारत की कल्पना कितनी साकार हो पाई है इस बात पर विचार करना आवश्यक है।

महात्मा गाँधी बीसवीं सदी के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं; जिनकी अप्रत्यक्ष उपस्थिति उनकी मृत्यु के सत्तर वर्षों से अधिक समय के बाद भी पूरे देश पर देखी जा सकती है। उन्होंने स्वतंत्र भारत की कल्पना की और उसके लिए कठिन संघर्ष किया। स्वाधीनता से उनका अर्थ केवल ब्रिटिश राज से मुक्ति का नहीं था बल्कि वह गरीबी, निरक्षरता और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों से मुक्ति का भी था। वह चाहते थे कि देश के सारे नागरिक समान रूप से आज़ादी और समृद्धि का सुख पा सकें।

उनके बहुत-से परिवर्तनकारी विचार, जिन्हें उस समय, असंभव कह परे कर दिया गया था, आज न केवल स्वीकार किये जा रहे हैं बल्कि अपनाए भी जा रहे हैं। आज की पीढ़ी के सामने यह स्पष्ट हो रहा है कि गाँधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे।

स्वराज्य का अर्थ -

गांधी के अनुसार , स्वराज्य एक पवित्र शब्द है। जिसका अर्थ आत्मा-शासन और आत्म-संयम है। अंग्रेजी शब्द 'इंडिपेंन्स' अक्सर सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आजादी का या स्वच्छंदता का अर्थ देता है; वह अर्थ स्वराज्य शब्द में नहीं है।

बापू आगे लिखते है, "स्वराज्य से मेरा अभिप्राय है लोक-सम्पति के अनुसार होने वाला भारतवर्ष का शासन। लोक-सम्पत्ति का निश्चय देश के बालिग लोगों को बड़ी-से-बड़ी तादाद के मत के जरिये हो, फिर वे चाहे स्त्रियाँ हों या पुरुष, इसी देश के हों या इस देश में आकर बस गये हों जिन्होंने अपने शरीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और जिन्होंने मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो।...सच्चा स्वराज्य थोड़े लोगों के द्वारा सत्ता कर लेने से नहीं बल्कि जब सत्ता का दुरुपयोग होता हो तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में स्वराज्य जनता में इस बात का ज्ञान पैदा करके प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता पर कब्जा करने और उसका नियमन करने की क्षमता उसमें है।"

आखिर स्वराज्य निर्भर करता है हमारी आतंरिक शक्ति पर, बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों से जूझने की हमारी ताकत पर। सच पूछो तो वह स्वराज्य, जिसे पाने के लिए अनवरत प्रयत्न और बचाये रखने के लिए सतत् जागृति नहीं चाहिये, स्वराज्य कहलाने के लायक ही नहीं है।

गांधी के सपनों का भारत

अपनी किताब 'मेरे सपनों का भारत' में गांधी लिखते है कि भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षायें रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिये, वह सब उसे भारत में मिल सकता है। भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है, भोगभूमि नहीं। भारत दुनिया के उन इने-गिने देशों में से है, जिन्होंने अपनी अधिकांश पुरानी संस्थाओं को, कायम रखा है। साथ ही वह अभी तक अन्ध-विश्वास और भूल-भ्रान्तियों की इस काई को दूर करने की और इस तरह अपना शुद्ध रूप प्रकट करने की अपनी सहज क्षमता भी प्रकट करता है। उसके लाखों करोड़ों निवासियों के सामने जो आर्थिक कठिनाइयाँ खड़ी हैं, उन्हें सुलझा सकने की उनकी योग्यता में मेरा विश्वास इतना उज्जवल कभी नहीं रहा जितना आज है।

भारत का ध्येय -

गांधी कहते हैं, मेरा विश्वास है कि भारत का ध्येय दूसरे देशों के ध्येय से कुछ अलग है। भारत में ऐसी योग्यता है कि वह धर्म के क्षेत्र में दुनिया में सबसे बड़ा हो सकता है। भारत ने आत्मशुद्धि के लिए स्वेच्छापूर्वक जैसा प्रयत्न किया है, उसका दुनिया में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। भारत को फौलाद के हथियारों की उतनी आवश्यकता नहीं है; वह हथियारों से लड़ा है और आज भी वह उन्हीं हथियारों से लड़ सकता है। दूसरे देश पशुबल के पुजारी रहे हैं। यूरोप में अभी जो भयंकर युद्ध रहा है, वह इस सत्य का एक प्रभावशाली उदाहरण है। भारत अपने आत्मबल से सबको जीत सकता है। इतिहास इस सच्चाई को चाहे जितने प्रमाण दे सकता है कि पशुबल आत्मबल की तुलना में कुछ नहीं है। कवियों ने इस बल की विजय के गीत गाये हैं और ऋषिओं ने इस विषय में अपने अनुभवों का वर्णन करके उसकी पुष्टि की है।

यदि भारत तलवार की नीति अपनाये, तो वह क्षिणक सी विजय पा सकता है। लेकिन तब भारत मेरे गर्व का विषय नहीं रहेगा। मैं भारत की भक्ति करता हूँ, क्योंकि मेरे पास जो कुछ भी है वह सब उसी का दिया हुआ है। मेरा पूरा विश्वास है कि उसके पास सारी दुनिया के लिए एक सन्देश है। उसे यूरोप का अन्धानुकरण नहीं करना है। भारत के द्वारा तलवार का स्वीकार मेरी कसौटी की घड़ी होगी। मैं आशा करता हूँ कि उस कसौटी पर मैं खरा उतरूँगा। मेरा धर्म भौगोलिक सीमाओं से मर्यादित नहीं है। यदि उसमें मेरा जीवंत विश्वास है तो वह मेरे भारत-प्रेम का भी अतिक्रमण कर जायेगा। मेरा जीवन अहिंसा-धर्म के पालन द्वारा भारत की सेवा के लिए समर्पित है।

यदि भारत ने हिंसा को अपना धर्म स्वीकार कर लिया और यदि उस समय मैं जीवित रहा, तो मैं भारत में नहीं रहना चाहूँगा। तब वह मेरे मन में गर्व की भावना उत्पन्न नहीं करेगा। मेरा देशप्रेम मेरे धर्म द्वारा नियंत्रण है। मैं भारत से उसी तरह बंधा हुआ हूँ, जिस तरह कोई बालक अपनी माँ की छाती से चिपटा रहता है; क्योंकि मैं महसूस करता हूँ कि वह मुझे मेरा आवश्यक आध्यात्मिक पोषण देता है। उसके वातावरण से मुझे अपनी उच्चतम आकांक्षाओं की पुकार का उत्तर मिलता है। यदि किसी कारण मेरा विश्वास हिल जाय या चला जाय, तो मेरी दशा उस अनाथ के जैसी होगी जिसे अपना पालक पाने की आशा ही न रही हो।

बलवान भारत की कल्पना -

गांधी कहते है, "मैं भारत को स्वतंत्र और बलवान बना हुआ देखना चाहता हूँ, क्योंकि मैं चाहता हूं कि वह दुनिया के भले के लिए स्वेच्छापूर्वक अपनी पवित्र आहुति दे सके। भारत की स्वतंत्रता से शांति और युद्ध के बारे में दुनिया की दृष्टि में जड़मूल से क्रांति हो जायेगी। उसकी मौजूदा लाचारी और कमजोरी का सारी दुनिया पर बुरा असर पड़ता है।"

मैं यह मानने जितना नम्र तो हूँ ही कि पश्चिम के पास बहुत कुछ ऐसा है, जिसे हम उससे ले सकते हैं, पचा सकते हैं और लाभान्वित हो सकते हैं। ज्ञान किसी एक देश या जाति के एकाधिकार की वस्तु नहीं है। पश्चात्य सभ्यता का मेरा विरोध असल में उस विचारहीन और विवेकाहीन नकल का विरोध है, जो यह मानकर की जाती है कि एशिया-निवासी तो पश्चिम से आने वाली हरेक चीज की नकल करने जितनी ही योग्याता रखते हैं।....मैं दृढ़तापूर्वक विश्वास करता हूँ कि यदि भारत ने दु:ख और तपस्या की आग में गुजरने जितना धीरज दिखाया और अपनी सभ्यता पर- जो अपूर्ण होते हुए भी अभी तक काल के प्रभाव को झेल सकी है-किसी भी दिशा से कोई अनुचित आक्रमण न होने दिया, तो वह दुनिया की शांति और ठोस प्रगति में स्थायी योगदान कर सकती है।

भारत का भविष्य पश्चिम के उस रक्त-रंजित मार्ग पर नहीं है जिस पर चलते-चलते पश्चिम अब खुद थक गया है; उसका भविष्य तो सरल धार्मिक जीवन द्वारा प्राप्त शांति के अहिंसक रास्ते पर चलने में ही है। भारत के सामने इस समय अपनी आत्मा को खोने का खतरा उपस्थित है। और यह संभव नहीं है कि अपनी आत्मा को खोकर भी वह जीवित रह सके।

पश्चिम के अंधानुकरण का विरोध -

गांधी कहते है कि यूरोपीय सभ्यता बेशक यूरोप के निवासियों के लिए अनुकूल है; लेकिन यदि हमने उसकी नकल करने की कोशिश की, तो भारत के लिए उसका अर्थ अपना नाश कर लेना होगा। इसका मतलब यह नहीं कि उसमें जो कुछ और हम पचा सकें ऐसा हो, उसे हम लें नहीं या पचायें नहीं। इसी तरह उसका यह मतलब भी नहीं है कि उस सभ्यता में जो दोष घुस गये हैं, उन्हें यूरोप के लोगों को दूर नहीं करना पड़ेगा। शारीरिक सुख-सुविधाओं की सतत खोज और उनकी संख्या में तेजी से हो रही वृद्धि ऐसा ही एक दोष है; और मैं साहसपूर्वक यह घोषणा करता हूँ कि जिन सुख-सुविधाओं के वे गुलाम बनते जा रहे हैं उनके बोझ से यदि उन्हें कुचल नहीं जाना है, तो यूरोपीय लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा। संभव है मेरा यह निष्कर्ष गलत हो, लेकिन यह मैं निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि भारत के लिए इस सुनहरे मायामृग के पीछे दौड़ने का अर्थ आत्मनाश के सिवा और कुछ न होगा। हमें अपने हृदयों पर एक पाश्चात्य तत्त्वनाश का यह बोधवाक्य अंकित कर लेना चाहिये- 'सादा जीवन उच्च चिन्तन'। आज तो यह निश्चित है कि हमारे लाखों-करोड़ों लोगों के लिए सुख सुविधाओं वाला जीवन संभव नहीं है और हम मुट्ठी भर लोग, जो सामान्य जनता के लिए चिन्तन करने का दावा करते हैं, सुख-सुविधाओं वाले उच्च जीवन की निरर्थक खोज में उच्च चिन्तन को खोने का जोखिम उठा रहे हैं।

भेदभाव रहित भारत का विचार -

गांधी के विचार में हम ऐसे भारत के बारे में सोचते है जिसमे गरीब-से-गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि यह उनका देश है-जिनके निर्माण में उनकी आवाज का महत्त्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा। जिसमें ऊँचे और नीचे वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। ऐसे भारत में अस्पृश्यता के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार होंगे जो पुरुषों को होंगे। यह है मेरे सपनों का भारत।... इससे भिन्न किसी चीज से संतोष नहीं होगा।

–सुरेंद्रसिंह शेखावत,
(लेखक राजनीतिक कार्यकर्ता है तथा गांधी पर रिसर्च स्कॉलर है ।)

सूची में नाम होने के बाद भी पत्रकार का नहीं किया सम्मान

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर में आयोजित हुए उपखण्ड स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में सूची में तय नाम के बाद भी सम्मान नहीं करके एक पत्रकार का अपमान करने के मामले में नगरवासियों ने कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा। जिसमें मांग की गई कि किस वजह से सूची में तय नाम होने के बाद हटाया गया और सम्मान नहीं करके युवा पत्रकार का जिस प्रकार अपमान किया गया हैं इसके लिए उपखण्ड प्रशासन लिखित माफी मांगें।

ज्ञापन में बताया कि 15 अगस्त को भीण्डर में आयोजित उपखण्ड स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह कार्यक्रम में सम्मानित होने वाले प्रतिभाओं की सूची भीण्डर उपखण्ड कार्यालय से हस्ताक्षरशुदा 14 अगस्त शाम 6 बजे सार्वजनिक की गई थी। जिसमें पत्रकारिता क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले भीण्डर के पत्रकार महेन्द्र सिंह राठौड का नाम भी शामिल था। लेकिन अगले दिन 15 अगस्त को आयोजित हुए कार्यक्रम में महेन्द्र सिंह राठौड का नाम ना तो पुकारा गया और ना ही प्रशासन द्वारा सम्मान किया गया। जिससे युवा पत्रकार महेन्द्र सिंह राठौड का सम्मान नहीं करके एक तरह से अपमान किया गया हैं जो निंदनीय है। प्रशासन द्वारा सूची जारी होने के बाद राजनीतिक द्वेषता के चलते प्रशासन पर दबाव बनाकर नाम हटाना एक ओछी राजनीतिक दर्शाता है। सूची में नाम होने के बाद भी सम्मान नहीं करने का क्या कारण रहा और सूची में नाम होने के बाद भी सम्मान नहीं करके जिस प्रकार अपमानित किया गया हैं, इसके लिए प्रशासन सार्वजनिक तौर पर माफी पत्र जारी करें।

ज्ञापन देने के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता प्रभाशंकर शर्मा, पूर्व पालिकाध्यक्ष व पार्षद गोवर्द्धनलाल भोई, पार्षद सुरेश कंठालिया, पार्षद अशोक सोनी, इन्द्रलाल फान्दोत, नरेन्द्र वाणावत, किशनलाल अहीर, प्रेमसिंह चौहान, महेन्द्र लक्षकार, हिमांशु राजमाली, महेन्द्र सिंह पंवार, पार्षद ओमप्रकाश भोई, पार्षद जितेन्द्र साहु, पार्षद मोहन मीणा, बंशीलाल खटीक, मुकेश पण्डिया, नरेश धर्मावत, विशाल जैन, रत्नेश कोठारी, कन्हैयालाल चौबीसा, पवन मंदावत, कैलाश जांगीड, हातिम बोहरा, खोजेमा बोहरा, चमन सोनी, तेजसिंह शक्तावत, चक्रवीरसिंह शक्तावत, दीपक चौबीसा, अशोक धर्मावत, मंगल कुमार दाता, लक्ष्मण कीर, गोपाल विजावत, चेतन भोई, राहुल प्रजापत, लोकेश भोई, अनिल चव्हाण, विरेन्द्र दक, कालुलाल जाट, राजु अहीर, नरेश अहीर, भंवरलाल अहीर, शांतिलाल अहीर, नंदलाल अहीर, प्रवीण मेघवाल, हेमंत यादव सहित सैकडों नगरवासी उपस्थित थे।

जवाई बांध का जलस्तर 39 फीट पहुंचा 24 घंटे में पांच फीट पानी आया

जवाई की सहायक नदियां पूरे वेग पर, सेइ बांध ओवरफ्लो होकर छलकने लगा

पाली, (निसं)। पिछले 2 सालों से कम बारिश के कारण पश्चिमी राजस्थान के सबसे बड़े बांध जवाई बांध का जलस्तर 6 फीट पहुंच गया था, लेकिन इंद्रदेव की मेहरबानी से इस बार लगातार बारिश होने से नदियां बहने लगी और बांध का पानी बढ़ता जा रहा है।

पिछले दो दिन जवाई क्षेत्र में अच्छी बारिश के कारण मंगलवार तक बेड़ा नदी व सहायक नदियां पूरे वेग से बहने के कारण 24 घंटे में 5 फीट पानी बढ़ गया। मंगलवार शाम 5:00 बजे तक 39 फीट पहुंच गया, जिससे करीब डेढ़ साल का पानी आ गया है। जवाई भराव के कारण जिले वासियों जलदाय विभाग सिंचाई विभाग सभी के चेहरे खिल उठे हैं।

■ जवाई बांध भराव के कारण जिले वासियों जलदाय विभाग सिंचाई विभाग व सभी के चेहरे खिल उठे हैं

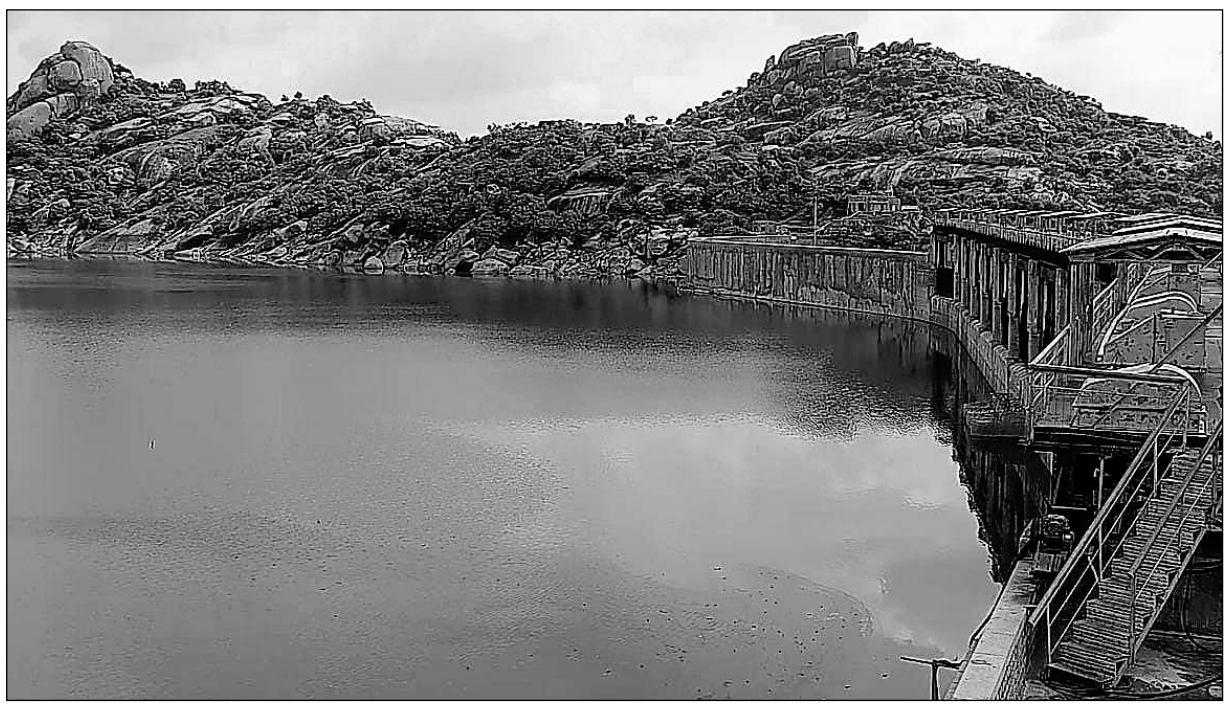

पिछले 2 सालों से कम बारिश के कारण पश्चिमी राजस्थान के सबसे बड़े बांध जवाई बांध पानी का आवक शुरू हुई।

अभी बारिश का दौर जारी है। शायद आगामी दिनों में बांध भरने से गेट खोलने पड़े। उधर सेइ बांध ओवरफ्लो होकर छलकने लगा है। जिले के सभी बांध में पानी आया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 17 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 9:57 तक, गंड योग रात्रि 8:56 तक, गर करण प्रात: 8:21 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग प्रात: 7:23 तक है, रात्रि 9:57 से पुन: आरम्भ होगा। कुमार योग रात्रि 8:25 तक है। राजयोग रात्रि 9:57 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 8:25 से गुरूवार प्रात: 8:53 तक रहेगी। आज भाद्रपद संक्रांति, सूर्य मघा सिंह में प्रवेश प्रात: 7:23 पर करेगा। पुण्य काल दिन 1:47 तक है। आज चान्द छठ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 10:40 पर होगा। आज हल षष्ठि, बलदेव जयन्ती, ललही छठ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, चर 3:45 से 5:22 तक, लाभ 5:22 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:03, सूर्यास्त 6:54

मेष
कुछ समय से चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कन्या
अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

तुला
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में मनोरंजन का माहौल रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। घर-परिवार में चल रहे वाद-विवाद समाप्त होंगे।